शिक्षा संकाय

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

वाराणसी

एम0ए0 शिक्षाशास्त्र

(सेमेस्टर पाठ्यक्रम)

नियमावली एवं पाठ्यक्रम

सत्र

2013–14

एम0 ए0 शिक्षाशास्त्र

नियमावली एवं पाठ्यक्रम

1. **प्रवेश अर्हता** : ऐसे अभ्यर्थी जो किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक अथवा उसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हैं तथा जो स्नातक स्तर पर ऐच्छिक विषय के रूप में शिक्षाशास्त्र विषय पढ़ चुके हैं वे ही एम0ए0 शिक्षाशास्त्र में प्रवेश के पात्र होंगे। सभी अभ्यर्थी संस्थागत रूप में ही प्रवेश ले सकेंगे।
2. **अवधि** : एम0ए0 शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्षो की होगी जो चार सेमेस्टर में विभाजित होगी।
3. **पाठ्यक्रम** : एम0ए0 शिक्षाशास्त्र के प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्नपत्र होंगे जिनमें प्रत्येक के लिए अलग–अलग 100 अंक निर्धारित हैं। इस प्रकार प्रत्येक सेमेस्टर 400 अंक का होगा। चारों सेमेस्टर का सकल पूर्णांक 1600 अंकों का होगा।

प्रथम सेमेस्टर

क्रम सं0	प्रश्न पत्र सं0	प्रश्न पत्र शीर्षक	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्नपत्र	शिक्षा के दार्शनिक आधार (Philosophical Foundation of Education)	100
2	द्वितीय प्रश्नपत्र	शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार (Sociological Foundation of Education)	100
3	तृतीय प्रश्नपत्र	भारतीय शिक्षा का विकास (Development of Indian Education)	100
4	चतुर्थ प्रश्नपत्र	शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी (Educational Research & Statistics)	100
		पूर्णांक	**400**

द्वितीय सेमेस्टर

क्रम सं0	प्रश्न पत्र सं0	प्रश्न पत्र शीर्षक	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्नपत्र	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Foundation of Education)	100
2	द्वितीय प्रश्नपत्र	तुलनात्मक शिक्षा (Comparative Education)	100
3	तृतीय प्रश्नपत्र	शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन (Educational Management and Administrat)	100
4	चतुर्थ प्रश्नपत्र	प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी (Practical work & Viva-voce)	100
		पूर्णांक	**400**

तृतीय सेमेस्टर

क्रम सं0	प्रश्न पत्र सं0	प्रश्न पत्र शीर्षक	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्नपत्र	शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श (Guidance and counselling in Education)	100
2	द्वितीय प्रश्नपत्र	विशिष्ट बालकों की शिक्षा (Education for special children)	100
3	तृतीय प्रश्नपत्र	दूरस्थ शिक्षा (Distance Education)	100
4	चतुर्थ प्रश्नपत्र	पर्यावरण शिक्षा (Environmental Education)	100
		पूर्णांक	**400**

चतुर्थ सेमेस्टर

क्रम सं0	प्रश्न पत्र सं0	प्रश्न पत्र शीर्षक	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्नपत्र	शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन (Educational measurement and evaluation)	100
2	द्वितीय प्रश्नपत्र	शैक्षिक तकनालॉजी (Educational Technology)	100
3	तृतीय प्रश्नपत्र	भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ (Contemporary issues of Indian Education)	100
4	चतुर्थ प्रश्नपत्र	प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी (Practical work & Viva-voce)	100
		पूर्णांक	**400**

4. **परीक्षा एवं परीक्षा फल की घोषणा–** परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित तिथि पर होगी तथा उत्तर पुस्तिकाओं, उत्तीर्णांक, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के प्राप्तांक का निर्धारण एवं परीक्षाफल की घोषणा विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर परीक्षा के नियमों के अनुरूप होगा।

5. **प्रायोगिक एवं मौखिकी परीक्षा–** विश्व विद्यालय द्वारा नियुक्त एक वाह्य एवं एक आन्तरिक परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोगिक एवं मौखिकी परीक्षा सम्पन्न करायी जायेगी जो विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार प्रत्येक अभ्यर्थी को अंक प्रदान करते हुये अंक पत्र प्रस्तुत करेंगे जिन्हें सम्मिलित करते हुये परीक्षाफल की घोषणा की जायेगी।

प्रवेश संख्या, प्रवेश प्रक्रिया एवं शुल्क संरचना विश्वविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर (संस्थागत एवं स्ववित्तपोषित) के लिए निर्धारित नियमों के अनुरूप होगी।

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र

शिक्षा के दार्शनिक आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- दर्शन एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध एवं शैक्षिक दर्शन के महत्व को समझ सकेंगे।
- पाश्चात्य दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- भारतीय दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के विषय में अवगत हो सकेंगे।

इकाई–1. दर्शनः अर्थ, प्रकृति एवं विषय क्षेत्र, शिक्षा दर्शन की आवश्यकता, शिक्षा एवं दर्शन में संबंध।

इकाई–2. शिक्षा दर्शन के पाश्चात्य सम्प्रदाय– आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद एवं अस्तित्ववाद : सिद्धान्त, उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–3. शिक्षा दर्शन के भारतीय सम्प्रदाय– सांख्य, वेदान्त एवं बौद्ध : सिद्धान्त, उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–4. विवेकानंद, रबीन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी एवं जे0 कृष्णमूर्ति का शिक्षा मे योगदान।

अध्ययन ग्रन्थः

- चतुर्वेदी, सीताराम (1970), शिक्षा दर्शन, हिन्दी समिति, सूचना विभाग लखनऊ।
- तनेजा, बी0आर0 (1979), सोशियो–फिलासफीकल एप्रोच टू एजुकेशन, एटलांटिकपब्लि, दिल्ली।
- नेलर, जार्ज एफ (1971), इन्ट्रोडक्शन टू फिलासफी आफ एजुकेशन, जान विली एण्ड सन्स।
- पाण्डेय, के0पी0 (1988), परस्पेक्टिब्ज इन सोशल फाउन्डेशन आफ एजुकेशन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली।
- पाण्डेय, के0पी0 (1988), नवीन शिक्षा दर्शन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली।
- पाण्डेय, रामसकल (1983), शिक्षा दर्शन , विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- बेकर, जान एल मार्डन (1980), फिलासफीज आफ एजुकेशन ,टाटा मेग्राहिल।
- मारिल एल0 (1971), पाजिटिव रिलेटिवीज्मः एन इमरजेन्ट एजुकेशन फिलासफी विग्गी, हारपर रो।
- सिंह, बलजीत (1984), एजुकेशन ऐन इनवेस्टमेन्ट , मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न पत्र

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- समाजशास्त्र तथा शिक्षा के सम्बंध को जान सकेंगे।
- शैक्षिक समाजशास्त्र एवं शिक्षा के समाजशास्त्र के मध्य अन्तर करते हुये समाजशास्त्र की विभिन्न अध्ययन विधियों को जान सकेंगे।
- शिक्षा की आधुनिक प्रवृतियों को समझ सकेंगे।
- शिक्षा के अर्थशास्त्र का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई–1 समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सम्बंध, शैक्षिक समाजशास्त्र– अर्थ, विषयक्षेत्र एवं इसके अध्ययन की विधियाँ।

इकाई–2 शिक्षा तथा समुदाय, शिक्षा तथा धर्म, शिक्षा एवं संस्कृति, शिक्षा तथा लोकतंत्र, आधुनिकीकरण एवं शिक्षा : अर्थ एवं महत्व।

इकाई–3 सामाजीकरण की प्रकृति, बालक का सामाजीकरण, समाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं स्वरूप, सामाजिक स्तरीकरण तथा सामाजिक गतिशीलता, भारत में समाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित बाधायें जैसे– जाति, वर्ग, भाषा, धर्म एवं क्षेत्रवाद।

इकाई–4 शैक्षिक अवसरों की समानता एवं शिक्षा, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से वंचित वर्गो की शिक्षा– अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं और ग्रामीण जनता के विशेष सन्दर्भ में। शिक्षा का अर्थशास्त्र–सम्प्रत्यय एवं विकास, शिक्षा एवं अर्थिक विकास, पूँजी निवेश के रूप मे शिक्षा की अवधारणा।

अध्ययन ग्रन्थः

- पचौरी, गिरीश (2009), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, लायल बुक डिपों, मेरठ।
- पाण्डेय, के0पी0 (2007), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- पाण्डेय, रामशकल (2009), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- माथुर, एस0एस0 (2009), शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- मिश्रा, उषा (2008), शिक्षा का समाजशास्त्र, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।
- लाल, रमन विहारी (2009), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धन्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
- सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप (1978), शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार, एम0एल0 प्रिन्टर्स, सुभाषनगर, मेरठ।
- शर्मा, सरोज (2003), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, शीतल प्रिन्टर्स, सिंह कालोनी, जयपुर।

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्रश्नपत्र

भारतीय शिक्षा का विकास

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- प्राचीन भारतीय शिक्षा की प्रकृति से अवगत हो सकेंगे।
- ब्रिटिश काल में शिक्षा के विकास हेतु गठित विभिन्न आयोगों की संस्तुतियों को समझ सकेंगे।
- राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान के महत्व को जान सकेंगे।
- स्वतन्त्रता बाद भारतीय शिक्षा के विकास हेतु गठित विभिन्न आयोगों की संस्तुतियों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

इकाई–1 प्राचीन भारतीय शिक्षा– वैदिक, वौद्धकालीन एवं मध्यकालीन : उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, गुरू–शिष्य संबंध एवं शिक्षण केन्द्र के विशेष संदर्भ में।

इकाई–2 ब्रिटिश कालीन शिक्षा–मैकाले प्रस्ताव एवं एड्मस रिपोर्ट, वुड घोषणा पत्र (1854), हण्टर आयोग (1882), राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन एवं गोखले बिल (1910–12) : संस्तुतियाँ एवं प्रभाव।

इकाई–3 सैडलर आयोग (1917–19), वर्धा शिक्षा योजना (1937) : संस्तुतियाँ एवं प्रभाव।

राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान– विश्वभारती, जामिया मिलिया, गुजरात विद्यापीठ एवं काशी विद्यापीठ का योगदान।

इकाई–4 स्वाधीनता के बाद भारतीय शिक्षा के विकास हेतु गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53), शिक्षा आयोग (1964–66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986 एवं 1992) : संस्तुतियाँ एवं प्रभाव।

अध्ययन ग्रन्थः

- अग्रवाल, जे0सी0 (2007), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली।
- गुप्ता, एस0पी0 (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- जौहरी, वी0पी0 एवं पाठक, पी0डी0 (1984), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- नुरूल्लाह सैयद एण्ड नायक, जे0पी0 (1955), ए स्टूडेन्ट हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन, मैक्क मिलन कम्पनी, इण्डिया लिमिटेड, बाम्बे।
- पाठक, पी.डी. (1974), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- मुकर्जी, आर0के0 (1960), एंसियंट इण्डियन एजूकेशन, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
- शर्मा, आर0ए0 (2007), भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।

प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्नपत्र

शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी

उद्देश्य–इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं उसके क्षेत्र को जान सकेंगे।
- अनुसंधान के विविध प्रकारों (मौलिक, व्यवहृत एवं क्रियात्मक) में अन्तर कर सकेंगे।
- शैक्षिक अनुसंधान की विधियों को जान सकेंगे।
- शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- शैक्षिक शोध से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों का प्रयोग कर सकेंगे।
- आकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं उद्देश्य, अनुसंधान के प्रकारः मूलभूत, व्यवहृत एवं क्रियात्मक अनुसंधान– उद्देश्य, समस्या की प्रकृति, विधि एवं शोध परिणामों के उपयोग की दृष्टि से अन्तर, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां– ऐतिहासिक, वर्णनात्मक सर्वेक्षण, प्रयोगात्मक, कार्योत्तर एवं व्यष्टि अध्ययन की प्रणाली, गुणात्मक शोध–अर्थ, प्रकार एवं विधि, शोध समस्या की स्थापना– समस्या का चयन, परिभाषीकरण एवं सीमांकन।

इकाई–2 परिकल्पना निर्माण– प्रकिया, स्रोत एवं अच्छी परिकल्पना की विशेषताएं, परिकल्पना परीक्षण, सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष निरूपण, शैक्षिक शोध में समग्र एवं प्रतिदर्श, प्रतिदर्श चयन की सम्भाव्यता एवं असम्भाव्यता पर आधारित विधियां, अच्छे प्रतिदर्श की विशेषतायें, आधार सामग्री के संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण–शोध उपकरण की विशेषताएं, प्रयोग विधि– प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रेक्षण, क्रम निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल), समाजमिति।

इकाई–3

- केन्द्रवर्तीमान–मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक– गणना विधि एवं प्रयोग।
- विचलन मान– मध्यमान विचलन, प्रामाणिक विचलन एवं चतुर्थांश विचलन– गणना विधि एवं प्रयोग।
- सहसम्बन्ध गुणांक– स्पीयरमैन, कार्लपियर्सन विधि द्वारा सहसम्बन्ध ज्ञात करना तथा परिणामों की व्याख्या।
- प्रदत्तों का रेखाचित्रीय प्रदर्शन– स्तम्भाकृति, आवृत्ति बहुभुज, संचयी आवृत्ति वक्र, संचयी आवृत्ति प्रतिशत वक्र।

इकाई–4

- सामान्य सम्भाव्यता वक्र की विशेषतायें एवं उपयोग।
- प्राचलिक परीक्षण– टी परीक्षण, एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण।
- अप्राचलिक परीक्षण– काई वर्ग परीक्षण।
- । व ।। प्रकार की त्रुटि।

अध्ययन ग्रन्थः

- गुप्ता, एस0 पी0 (2002), सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
- पाण्डेय, के0पी0 (2006), शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- पाण्डेय, के0पी0 (1995), शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान, अमिताश प्रकाशन, मेरठ।
- पाण्डेय, के0पी0 (2007), शिक्षा एवं मनोविज्ञान में साख्यिकीः विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- राय, पारसनाथ (1985), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
- वर्मा, एम0 (1965), एन इन्ट्रोडक्शन टु एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, एशिया पब्लिशिंग हाउस।
- शर्मा, आर0ए0 (2011), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल, बुक डिपो, मेरठ।
- सिंह, अरूण कुमार (2010), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास बंगलो रोड, दिल्ली।

द्वितीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्नपत्र
शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ, विषय क्षेत्र, इसकी भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा तथा शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- बुद्धि की अवधारणा एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों को जान सकेंगे।
- व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
- अधिगम के विभिन्न सिद्धान्तों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- अभिप्रेरणा एवं समंजन के सम्प्रत्यय एवं उसके शैक्षिक निहितार्थ को समझ सकेंगे।
- विशिष्ट बालकों की पहचान एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था को जान सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र, शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सम्बन्ध, शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन की विधियाँ, बालक का सामाजिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास, बृद्धि एवं विकास का सम्बन्ध, शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि।

इकाई–2 बुद्धि–परिभाषा, सिद्धांत– गिलफोर्ड का बुद्धि संरचना प्रतिमान, संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि का मापन, व्यक्तित्व की परिभाषा, सिद्धांत, विशेषक सिद्धांत–आलपोर्ट एवं कैटिल मनोविश्लेषणवादी सिद्धांत– फ्रायड, व्यक्तित्व का मापन, बुद्धि एवं व्यक्तित्व की अवधारणा– भारतीय दृष्टि।

इकाई–3 अधिगम का अर्थ, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम के सिद्धांत– कोहलर का सूझ एवं अन्तर्दृष्टि सिद्धांत, हल्ल का आवश्यकता ह्रासन अधिगम सिद्धांत, टॉलमैन का संकेत अधिगम सिद्धांत, गेने का अधिगम पर दृष्टिकोण, अधिगम अन्तरण और इसके सिद्धांत, अभिप्रेरणाः– सम्प्रत्यय, भारतीय अवधारणाः पुरूषार्थ चतुष्ट्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) एवं शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–4 विशिष्ट बालक– सृजनात्मक, प्रतिभाशाली, पिछड़े तथा मन्दितमना बालकों की विशेषताएं एवं इनकी शिक्षा व्यवस्था, समंजन : अर्थ, प्रक्रिया, मानसिक द्वन्द्व एवं रक्षायुक्तियाँ।

अध्ययन ग्रन्थः

- गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता ए0 (2004), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
- पाण्डेय, के0पी0 (2009), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
- पाण्डेय, कल्पलता एवं श्रीवास्तव एस0एस0 (2007), शिक्षा मनोविज्ञान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि, टाटा मैग्राहिल, नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के0पी0 (2007), एडवांस एजूकेशनल साइकोलाजी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- शर्मा, आर0 एवं शर्मा आर0 (1962), भारतीय मनोविज्ञान, अटलांटिक पब्लिशर एवं डिस्ट्रीव्यूटर, नई दिल्ली।

द्वितीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्नपत्र
तुलनात्मक शिक्षा

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों को जान सकेंगे ।
- विभिन्न देशों की भौगोलिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों कों समझ सकेंगे।
- विकसित राष्ट्रों के विकास के मूल में शिक्षा की अनिवार्यता को समझ सकेंगे।
- विकासशील एवं विकसित राष्ट्रों की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं से परिचित हो सकेंगे।
- विभिन्न देशों की शिक्षा व्यवस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन कर अपने कौशल एवं चिंतन में परिवर्तन कर सकेंगे।
- ब्रिटेन, अमेरिका तथा भारत की शैक्षिक परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

इकाई–1 तुलनात्मक शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र, विकास, उद्देश्य, एवं अध्ययन विधियाँ वर्णनात्मक, सामाजिक, संस्कृति, वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय, तुलनात्मक शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक।
राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का योगदान।

इकाई–2 भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में प्राथमिक शिक्षा– उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम।
भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में माध्यमिक एवं व्यावसायिक शिक्षा–उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम।

इकाई–3 भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में उच्च शिक्षा के उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम।
भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम।

इकाई–4 भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में दूरवर्ती एवं सतत् शिक्षा।
भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में शैक्षिक स्वायत्तता ।

अध्ययन ग्रन्थ:

- चौबे, सरयू प्रसाद (2008), तुलनात्मक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- जायसवाल, सीताराम (1970), तुलनात्मक शिक्षा, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उ0प्र0, लखनऊ।
- पाण्डेय, के0पी0 (1988), कम्परेटिव एजूकेशन, अमिताश प्रकाशन, गाजियाबाद, दिल्ली।
- पाण्डेय, के0पी0 (1987), तुलनात्मक शिक्षा, अमिताश प्रकाशन, भवानी नगर, मेरठ।
- मलैया, के0सी0 (1966), तुलनात्मक शिक्षा, लोक भारती प्रकाशन।

द्वितीय सेमेस्टर
तृतीय प्रश्नपत्र
शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- शिक्षा में प्रबन्धन के विभिन्न उपागमों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- शैक्षिक प्रबन्ध के कार्यो को समझ सकेंगे।
- विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेंगे ।
- शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा को समझ सकेंगे ।
- शैक्षिक प्रशासन की संरचना के विभिन्न स्तरों के मध्य अंतर कर सकेंगे ।
- शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों की समीक्षा कर सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षा में प्रबन्धन एवं प्रशासन के सिद्वान्तों का विकास ;थ्योरी ऑफ टेलरिज्म, प्रशासन प्रक्रिया तथा ब्यूरोकेसी के रूप में संगठन, प्रबन्ध एवं प्रशासन की अवधारणा एवं उसमें परस्पर सम्बन्ध ;शिक्षा में प्रबन्ध के विभिन्न उपागम।

प्रबन्धन एवं प्रशासन के मुख्य कार्य एवं प्रक्रियाएँ : नियोजन, संगठन ,नेतृत्व, नियत्रण, मूल्यांकन।

इकाई–2 शैक्षिक प्रबन्धक की भूमिकाएँ एवं कार्य : शैक्षिक नेतृत्व, संगठनात्मक सीमाएं, नेतृत्व एवं प्रशासन, नेतृत्व शैली : मानवीय गुणों के उद्देश्यपूर्ण विकास हेतु अधिगम एवं अनुदेशन ।

पर्यावरण एवं विद्यालय : संगठनात्मक वातावरण– संप्रत्यय एवं मापन ।

इकाई–3 केन्द्रीय एवं राज्य स्तर पर शैक्षिक प्रशासन संरचना; उच्च शिक्षा में शैक्षिक प्रशासन के मुद्दे एवं समस्याएँ ।

शैक्षिक निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण :सम्प्रत्यय, क्षेत्र, सिद्वान्त एवं समस्याएँ ।

इकाई–4 भारत में शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा का विकासः संक्षिप्त परिचय, बजट एवं उसके प्रकार।

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के क्षेत्र में किये जा रहे शोध।

अध्ययन ग्रन्थः

- ओड, एल.के. (1992), शैक्षिक प्रशासन, जयपुर,राजस्थान ग्रंथ अकादमी।
- चतुर्वेदी, आर.एन. (1989),दि एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ हायर एजुकेशन इन इंडिया जयपुर, प्रिंटवेल प0।
- गुप्ता, एल,डी (1987), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, आक्सफोर्ड एवं आइ.बी.एच.।
- गोयल, एस. एल. (2005), मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.पी.एच. प0 कारपोरेशन।
- भटनागर, आर.पी. एवं अग्रवाल, विद्या (1986), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन : नई दिल्ली, इंटरनेशनल प0 हाउस।
- भट्ट, बी.डी. एवं शर्मा, एस.डी (1992), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन : हैदराबाद, कनिष्क प0 हाउस बुक लिंक कारपोरेशन।
- राय चौधरी, नमिता (1992), मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, नई दिल्ली, ए0पी0 एच0प0।

द्वितीय सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्नपत्र
प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी

विद्यार्थियों को प्रायोगिक कार्य के अन्तर्गत अधोलिखित 5 प्रयोगों को करना होगा। जिनमें से किन्ही दो प्रयोगों को प्रयोगिक परीक्षा में करना होगा।

1) व्यक्तित्व मापन
2) सृजनात्मक परीक्षण
3) आत्म सम्प्रत्यय
4) मूल्य परीक्षण
5) समाजमिति परीक्षण
6) अभिवृत्ति परीक्षण
7) अभिरूचि परीक्षण
8) आकांक्षा स्तर परीक्षण
9) चिन्ता मापन
10) प्रतिबल मापन

25+25=50

* अभिलेख पंजिका निर्माण एवं मौखिकी 25+25=50

कुल योग =100

तृतीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्नपत्र
शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- अपने दैनिक जीवन में निर्देशन के महत्व एवं उपयोग को समझ सकेंगे।
- निर्देशन के सिद्धान्त, अन्तर्निहित मान्यताएँ, आधुनिक प्रवृत्तियाँ एवं समस्याओं को जान सकेंगे।
- निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।
- निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न तकनीकी उपागमों का समस्या समाधान में प्रयोग कर सकेंगे।
- निर्देशन में विभिन्न मूल्यांकनो एवं प्रविधियों का प्रयोग कर सकेंगे।
- निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न उपकरणों एवं प्रविधियों को समझ सकेंगे।

इकाई–1. निर्देशन–अर्थ, आवश्यकता, क्षेत्र, सिद्धान्त, मान्यताएँ, प्रकृति एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ।
भारत में निर्देशन आन्दोलन का इतिहास, भारतीय सन्दर्भ में निर्देशन की वर्तमान स्थिति व समस्याएँ।

इकाई–2. निर्देशन के प्रकार– शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत– उद्देश्य, अन्तर एवं प्रयुक्त प्रविधियाँ, निर्देशन का प्रारूप– वैयक्तिक एवं सामूहिक।
विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रमों का संगठन एवं प्रशासन ।
व्यावसायिक सूचना – स्रोत, संग्रहण तथा प्रसारण।

इकाई–3. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्देशन सेवाएँ।
निर्देशन सेवाओं के प्रकार–सूचना सेवा, व्यक्तिगत–सूचना संग्रह, व्यावसायिक सूचनाः स्रोत संग्रह व प्रसारण, स्थापन सेवा, अनुवर्तन सेवा।

इकाई–4. परामर्शः अर्थ, सिद्धान्त, सोपान एवं प्रविधियाँ, परामर्श की प्रक्रिया तथा अच्छे परामर्शक की विशेषतायें, परामर्श के प्रकार–निदेशात्मक, अनिदेशात्मक तथा संकलनात्मक परामर्श–अर्थ, प्रक्रिया, अंतर।
निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन– मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियाँ एवं उपयोगिता।

अध्ययन ग्रन्थः

- अग्रवाल, जे0सी0 (1989), एजूकेशन वोकेशनल गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग, दिल्ली दोवाबा हाउस, दिल्ली।
- ओवेराय, एस0सी0 (2001), शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन एवं परामर्श, लायल बुक डिपों, मेरठ।
- जायसवाल, सीताराम (1987), शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- जान, आर्थर जे0 (1963) प्रिन्सिपिल्स आफ गाइडेन्स, मैग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, लंदन।
- पाण्डेय, के0पी0 एवं भारद्वाज, अमिता (2003), शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- मायर्स, जार्ज ई0 (1941), प्रिन्सिपिल्स एण्ड टेक्नीक्स आफ वोकेशनल गाइडेन्स, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क।
- दूबे, रमाकान्त (1982), शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के मूल आधार, राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
- वर्मा, रामपाल (1989), शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- शर्मा, आर0 ए0 एवं चतुर्वेदी शिखा (2010), निर्देशन एवं परामर्श के मूल तत्व, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
- त्रिपाठी, शशिकान्ति एवं राखी देब (2009), आधुनिक शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, कला प्रकाशन, वाराणसी।

तृतीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्नपत्र
विशिष्ट बालकों की शिक्षा

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- विशिष्ट बालक एवं उनकी विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- विकलांगों की समस्याओं को समझ सकेंगे ।
- पूर्ण बधिर एवं मूक बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था हेतु अपने सुझाव दे सकेंगे।
- वंचितों की स्थिति एवं वंचन के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे ।
- भारत एवं विश्व में मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बालकों के लिए दी जा रही सुविधाओं का मूल्याकंन कर सकेंगे ।
- विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु अध्ययन सामग्री का निर्माण कर सकेंगे ।

इकाई–1. विशिष्ट बालक– अर्थ, प्रकार, विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता, उपयोगिता एवं महत्व, भारत में विशिष्ट शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास एवं विषयक्षेत्र, समावेशी शिक्षा–अर्थ एवं विशेषताएँ।
विकलांग बालक– विकलांगता का अर्थ, विकलांगों की समायोजन समस्यायें, भौतिक एवं सामाजिक सुविधायें, विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि एवं विशिष्ट विद्यालय ।

इकाई–2. दृष्टि दोष ग्रस्त अथवा सम्पूर्ण रूप से दृष्टिबिहीन बालकः– दृष्टि दोष का अर्थ, पहचान, समायोजन समस्या, विशिष्ट माध्यम, समाज की मुख्य धारा में इन्हे जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास।
मूक एवं बधिर बालक– मूक–बधिर का अर्थ, पहचान, समायोजन, समस्या विशिष्ट शिक्षा–व्यवस्था, पाठ्यक्रम, अलग विद्यालय, शिक्षण विधि, शिक्षा माध्यम तथा समाज की मुख्य धारा में इन्हें जोड़ने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास ।

इकाई–3. वंचित बालक एवं उनकी शिक्षाः– वंचित बालक– वंचन का अर्थ, प्रकार, आधुनिक सामाजिक सन्दर्भ में वंचितों की स्थिति (दशा), कारण, बौद्धिक, संवेगात्मक, निष्पत्ति, व्यक्तित्व पर वंचन का प्रभाव, वंचितों को समाज में पुनः स्थापित करने में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका।

इकाई–4. मानसिक न्यूनता– अर्थ, पहचान, मानसिक न्यूनता से ग्रस्त बालकों के प्रकार, शिक्षा प्राप्त करने योग्य मानसिक विकलांग, प्रशिक्षण योग्य मानसिक विकलांग एवं अभिरक्षणीय, संवेगात्मक संतुष्टि के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था, उपचारात्मक शिक्षण एवं विशिष्ट पाठ्यक्रम का निर्माण, समाज में इनके पुनर्स्थापन में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका ।

अध्ययन ग्रन्थः

- कुण्डू, सी0एल0 (2000), स्टेट्स आफ डिसैविलिटी इन इण्डिया, भारतीय पुनर्वास परिषद्, नयी दिल्ली।
- कैनेडी, ए0 एण्ड फ्रेशर (1932), एजूकेशन आफ द बैकवर्ड चाइल्ड, डी0 एप्लेटन, सेन्चूरी कम्पनी, न्यूयार्क।
- जोसेफ, आर0ए0 (2003), पुनर्वास के आयाम, समाकलन पब्लिशर्स, विकलांग समाकलन संस्थान, करौंदी, बी0एच0यू0 वाराणसी।
- जोसेफ, आर0ए0 (2004), विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन पब्लिशर्स, विकलांग समाकलन संस्थान, करौंदी, बी0एच0यू0 वाराणसी।
- प्रेम शंकर (2005), विशिष्ट बालक, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
- शंकर, उदय (1976), एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन स्टर्लिंग पब्लिकेशन, प्रा0 लि0 न्यू डेलही।
- शर्मा, आर0ए0 (2003), फण्डामेन्टल आफ स्पेशल एजूकेशन, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
- सिंह, उत्तम कुमार एवं नायक ए0के0 (1997), स्पेशल एजूकेशन, कामन वेल्थ पब्लिशर्स, न्यू डेलही।

तृतीय सेमेस्टर
तृतीय प्रश्नपत्र
दूरस्थ शिक्षा

उद्देश्य – इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- दूरस्थ शिक्षा के सम्प्रत्यय एवं इसकी भारत एवं विदेशों में प्रासंगिकता से अवगत हो सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी एवं शिक्षक के स्वरुप, दायित्व एवं उनसे सम्बंधित विभिन्न समस्याओं को समझ सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त विभिन्न माध्यमों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा में आत्म अनुदेशित पाठ्य सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के संगठनात्मक स्वरूप का मूल्याकंन कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई–1. दूरस्थ शिक्षा– सम्प्रत्यय, आवश्यकता अध्ययन क्षेत्र एवं वर्तमान शैक्षिक सन्दर्भ में इसकी प्रासंगिकता। दूरस्थ शिक्षा का भारत में विकास एवं वर्तमान स्थिति ।

दूरस्थ शिक्षा का दार्शनिक आधार– माइकल मूरे, चार्ल्स बेडेमेयर, होमबर्ग एवं पीटर्स का सिद्धान्त एवं उसका शैक्षिक निहितार्थ ।

इकाई–2. दूरस्थ शिक्षा एवं शिक्षक– स्वरूप, दायित्व, योग्यता, समस्याएँ एवं प्रशिक्षण।

दूरस्थ शिक्षा एवं विद्यार्थी– स्वरूप, विशेषताएँ, विद्यार्थी सहायता सेवायें एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति की दृष्टि से उसकी प्रासंगिकता।

इकाइ–3. दूरस्थ शिक्षा एवं माध्यम– मुद्रित एवं अमुद्रित माध्यम, दूरस्थ शिक्षा मे इनका उपयोग, मुद्रित सामग्री– निर्माण की प्रक्रिया, अपेक्षित सावधानियाँ।

दूरस्थ शिक्षा का संगठनः स्वरूप, क्षेत्रीय एवं स्थानीय अध्ययन केन्द्र– स्वरूप, कार्यविधि एवं प्रासंगिकता।

इकाई–4. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा– विभिन्न प्रविधियाँ एवं उनका मूल्याकंन में अनुप्रयोग।

दूरस्थ शिक्षा में शोघ, वर्तमान स्थिति,एवं भविष्य में शोध के प्रमुख बिन्दु ।

अध्ययन ग्रन्थः

- पाण्डेय, कल्पलता (1988), दूरवर्ती शिक्षा के नये आयाम।
- शलिनी, राज : डिस्टेंस एजुकेशन, आई0वी0वाई0 पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- यादव, सियाराम : दूरवर्ती शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- गुप्ता, एस0 पी0 एवं गुप्ता, अल्का : दूरस्थ शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, आगरा।
- तिवारी, राघवेन्द्र : शिक्षा का नया विकल्प – दूर शिक्षा, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, मध्य प्रदेश।
- शर्मा, आर0ए0 (2004): दूरवर्ती शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

तृतीय सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्नपत्र
पर्यावरण शिक्षा

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- पर्यावरण के अर्थ, प्रदूषण एवं इसकी रोकथाम में अध्यापक की महती भूमिका से अवगत हो सकेंगे।
- परम्परागत भारतीय समाज में पर्यावरण के महत्व को समझ सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य, महत्व, प्रभावित करने वाले कारकों एवं इस सम्बन्ध में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों से की जाने वाली अपेक्षाओं को समझ सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न आब्यूह रचनाओं का प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्यावरण शिक्षा से जुड़ी हुई समस्याओं तथा उसके समाधान में शिक्षक की भूमिका को चिन्हित कर सकेंगे।
- पर्यावरण प्रबन्धन एवं पर्यावरण शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भूमिका का आकलन कर सकेंगे।

इकाई–1. पर्यावरण– तात्पर्य, विविध आयाम, पर्यावरण प्रदूषण : तात्पर्य, प्रकार, पर्यावरण विघटन, पर्यावरण प्रदूषण के रोकथाम में शिक्षक की भूमिका, परम्परागत भारतीय समाज में पर्यावरण का महत्व।

इकाई–2. पर्यावरण शिक्षाः तात्पर्य, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व, पर्यावरण शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक, पर्यावरण शिक्षा एवं शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं से अपेक्षाएँ।
पर्यावरण शिक्षा के विविध संसाधन एवं उनके उपयोग की विधियाँ, पर्यावरण शिक्षा के प्रचार–प्रसार में जन संचार माध्यमों की भूमिका।

इकाई–3. पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु आब्यूह रचना– ब्याख्यान, परिचर्चा, परियोजना, अनुरूपण एवं अनुरूपित खेल– समस्या समाधान, पृच्छा तथा क्षेत्रीय कार्य, उपयोग एवं सीमायें।
पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन एवं मूल्यांकन एवं उनके प्रयोग में कठिनाइयाँ।

इकाई–4. पर्यावरण शिक्षा में भारतीय मूल्यों की भूमिका, पर्यावरण चेतना के विकास में अध्यापकों का दायित्व।
पर्यावरण प्रबन्ध की अवधारणा, उद्देश्य, पर्यावरण संरक्षण के राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम, गैर सरकारी संस्थाओं के प्रयास तथा उनकी उपलब्धियाँ।

अध्ययन ग्रन्थः

- गुप्ता, बृजमोहन (1992), जनसंचार के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली।
- गोयल, एम0के0 (1995), अपना पर्यावरण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- प्रसाद, गुरू, सम्पादक (1985), मानव पर्यावरण की सामाजिक समस्यायें, नई दिल्ली।
- सक्सेना, ए0बी0 (1986), इनवायरमेण्टल एजुकेशनल नेशनल साइकोलाजिकल कारपोरेशन, आगरा।
- सक्सेना, ए0बी0 (1996), एजूकेशन फार दी इनवायरमेण्टल कन्सर्न्स, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के0पी0, भारद्वाज अमीता एवं पाण्डेय, आशा (2005), पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- सेंगर, एस0एस0 (1996), पर्यावरण शिक्षा, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
- शर्मा, आर0ए0 (2004), पर्यावरण शिक्षा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।

चतुर्थ सेमेस्टर
प्रथम प्रश्नपत्र
शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन में भेद कर सकेंगे।
- मूल्यांकन एवं उसके महत्वपूर्ण बिन्दुओं–यथा शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव और व्यवहार परिवर्तन का अर्थ समझ सकेंगे।
- एक अच्छे परीक्षण की विशेषताओं तथा निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षणो के गुण दोषों से अवगत हो सकेंगे।
- वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- परीक्षणों की विश्वसनीयता, वैधता तथा मानक निर्धारण की विधियों को समझ सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन–संकल्पना, आवश्यकता तथा महत्व, मापन तथा मूल्यांकन में भेद, शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण, मानक सन्दर्भित एवं निकष सन्दर्भित परीक्षण–अभिप्राय एवं विशेषताएँ, संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन– अभिप्राय एवं विशेषताएँ, सतत विस्तृत मूल्यांकन–सम्प्रत्यय तथा शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई–2 एक अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ, निबंन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषताएँ एवं सीमाएँ, वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण विधि एवं प्रमाणीकरणः शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण, पदलेखन, पद विश्लेषण, विभेदीकरणमान एवं काठिन्य स्तर निर्धारण।

इकाई–3 परीक्षणों की विश्वसनीयता एवं वैधता निरूपण, मानक निर्धारण, लिकर्ट तथा थर्स्टन प्रकार की अभिवृत्ति मापनी का निर्माण, बुद्धि, व्यक्तित्व, सृजनात्मकता के मापन संबन्धी परीक्षणों का विश्लेषण।

इकाई–4 मापन एवं मूल्यांकन में नवीन प्रवृत्तियाँ– परीक्षा सुधार, ग्रेडिंग पद्धति, सेमेस्टर पद्धति, प्रश्न बैंक, टी–प्राप्तांक, सी–प्राप्तांक, जेड–प्राप्तांक–सामान्य परिचय।

अध्ययन ग्रन्थः

- इबल, आर. एल. (1965), मीजरिंग एजुकेशनल एचीवमेन्ट इन्डिविजुवल, एन. जें. प्रेन्टिस हाल इन्फ।
- एनस्टासी, ए. (1968) साइक्लाजिकल टेस्टिंग, न्यूयार्क, द मैकमिलन कं0।
- गिलफोर्ड जे0पी0 (1954), साइकोमेट्रिक मेथड्स, न्यूयार्क, मेग्रो हिल बुक कं0।
- गुप्ता, एस0पी0 (1995), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- गेरेट, एच. इ. (1967), स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलाजी एण्ड एजुकेशन, बाम्बे बकिल्स, फेफर एण्ड साइमन्स प्रा. लि.।
- ग्रोनलुन्ड, एन.इ. (1954), मीजरमेंट एण्ड इवेलुएशन इन टीचिंग, न्यूयार्कः द मैकमिलन कं0।
- पाण्डेय, के0पी0 (2007), शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- फ्रीमैन, एफ. एस. (1965), थ्यूरी एण्ड प्रैक्टिस आफ साइक्लाजिकल टेस्टिंग, न्यू देलही, आक्सफोर्ड एण्ड एफ बी एच. पब्लिशिग कं0।
- ब्लूम, बी0 एस0 (1956), टैक्सोनामी आफ एजुकेशनल आब्जेक्टिव हैण्डबुक–1 कागनेटिव डोमेन्स, न्यूयार्कः डेविड मे के कं0।
- शर्मा, आर. ए. (1993), मापन एवं मूल्यांकन, लायल बुक डिपो, मेरठ।

चतुर्थ सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्नपत्र
शैक्षिक तकनालॉजी

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

- शैक्षिक तकनालॉजी का अर्थ एवं समकालीन प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।
- शैक्षिक तकनालॉजी के विभिन्न प्रकारों का अर्थ समझ सकेंगे।
- शिक्षण अधिगम सम्बन्ध की व्याख्या कर सकेंगे।
- अधिगम के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे।
- अभिक्रमित अनुदेशन की अवधारणा एवं प्रकारता से परिचित हो सकेंगे।
- शिक्षण में कम्प्यूटर सहअनुदेशन तथा सूचना प्रौद्योगिकी के योगदान से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक तकनालॉजी– तात्पर्य, क्षेत्र, विकास एवं समकालीन प्रवृत्तियाँ, तकनालॉजी के प्रकार, व्यवहार तकनालॉजी, अनुदेशन तकनालॉजी, शिक्षण तकनालॉजी, अनुदेशनात्मक रूपरेखा– प्रकृति एवं विषय क्षेत्र। शिक्षण–अधिगम सम्बन्ध, शिक्षण की प्रकारता, शिक्षण की अवस्थाएँ एवं उनकी संक्रियाएँ। शिक्षण अधिगम के स्तरः स्मृति स्तर, अवबोध स्तर, विमर्शी स्तर– स्वरूप अन्तर्निहित सिद्धान्त।

इकाई–2 शिक्षण के प्रतिमान– सम्प्रत्यय, आवश्यकता एवं आवश्यक तत्व, शिक्षण के प्रतिमानों का वर्गीकरण, शिक्षण के कुछ चुने हुए प्रतिमान– आधारभूत शिक्षण प्रतिमान, सम्प्रत्यय सम्प्राप्ति प्रतिमान– अवयव, विशेषताएँ एवं शैक्षिक निहितार्थ ।

इकाई–3 शिक्षण व्यवहार की धारणा, विशेषताएँ, एवं स्वरूप, कक्षा व्यवहार के क्रमिक स्वरूप, आब्यूह रचना एवं युक्तियाँ। शिक्षण व्यवहार के आशोधन की विधियाँ– सूक्ष्म शिक्षण, अनुरूपित शिक्षण,– सम्प्रत्यय एवं अनुप्रयोग।

इकाई–4 सम्प्रेषण एवं शिक्षण : सम्प्रेषण की संरचना, सिद्धान्त, प्रकार एवं प्रक्रिया, सम्प्रेषण के माध्यमों का वर्गीकरण, बहुमाध्यम उपागम, नेटवर्किंग।

अभिक्रमित अनुदेशन– उत्पत्ति, अवधारणा एवं प्रकारता– रेखीय, शाखीय एवं श्रृंखलित, अभिक्रम का निर्माण, अभिक्रम का लेखन एवं मूल्यांकन, शिक्षण में कम्प्यूटर सहअनुदेशन तथा सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान।

अध्ययन ग्रन्थः

- कुलश्रेष्ठ, एस0पी0 (2005), शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
- जायस, ब्रूश एवं वील मार्शा (1991), माडल्स आफ टीचिंग, सोसाइटी फार एजुकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, बड़ौदा।
- डिसीको, जॉन पी (1964), एजुकेशनल टेक्नालॉजीः रीडिंग प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शन, हाल, न्यू डेलही।
- पाण्डेय, के.पी.(2001), मार्डन कान्सेप्ट आफ टीचिंग विहेवियर, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स दिल्ली।
- पाण्डेय, सरला एवं उपाध्याय आर. (2001), शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- पाण्डेय, के.पी.(2011), शिक्षण अधिगम की तकनालॉजी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- पासी, वी. के. (1975), विकमिग वेटर टीचर, ए माइक्रो टीचिंग एप्रोच साहित्य, मुद्रण, अहमदाबाद।
- फ्लैण्डर्स, नेड (1972), एनेलाइजिंग टीचिंग विहेवियर, एडिशन विजले, पब्लिशिंग कम्पनी कैलीफोर्नियाँ।
- ब्राउडी, एल. (1972), माडल्स आफ टीचिंग, प्रेन्टिस हाल आफॅ आस्ट्रेलिया, आस्ट्रेलिया।
- शर्मा, आर0ए0 (2004), शिक्षण तकनीकी, आर लाल बुक डिपों, मेरठ।
- स्किनर बी. एफ. (1968), दी टेक्नालॉजी आफ टीचिंग, मेरेडिथ कारपोरेशन न्यूयार्क।
- सिंह, त्रिभुवन एवं सिंह प्रभाकर (1984), शिक्षण अभ्यास के सोपान, भारत भारती प्रकाशन, जौनपुर।
- सिंह, एल.सी. एवं शर्मा आर. डी. (1991), माइक्रो टीचिंग, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस नेशनल साइकोलाजिकल कारपोरेशन, आगरा।

चतुर्थ सेमेस्टर
तृतीय प्रश्नपत्र
भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ

उद्देश्य – इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी :

- भारतीय शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता एवं सजग दृष्टिकोण विकसित हो सकेगा।
- प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पाई जाने वाली समस्याओं का विश्लेषण कर सकेगा।
- राष्ट्रीय संस्थान यू0जी0सी0 (UGC), नैक (NAAC) एवं एन0सी0टी0ई0 (NCTE) की शिक्षा में भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- शिक्षा की कतिपय बुनियादी समस्याओं का विश्लेषण एवं भारतीय परिपेक्ष्य में उनका समाधान ढूँढ़ने की आलोचनात्मक दृष्टि विकसित हो सकेगी।

इकाई–1 प्राथमिक शिक्षा– अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या, शिक्षा के सार्वभौमिकरण एवं बीच में ही विद्यालय छोड़ देने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा की धारा में लाने की समस्या, इस सम्बन्ध में उठाये गये कदम। अनौपचारिक एवं खुले विद्यालयों के रूप में चलाये जाने वाले कार्यक्रमों का विश्लेषण एवं उनकी प्रभाविकता का मूल्यांकन।

माध्यमिक शिक्षा– संरचना, समस्याएँ, शिक्षा का व्यावसायिकरण एवं निहितार्थ।

इकाई–2 उच्च शिक्षा– विश्वविद्यालयों के प्रकार, उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की समस्या, मुक्त विश्वविद्यालय एवं पत्राचार पाठ्यक्रम प्रणाली।

विश्वविद्यालय की स्वायत्तता, राष्ट्रीय संस्थान– यू0जी0सी0 (UGC) एवं नैक (NAAC)की शिक्षा में उन्नति हेतु भूमिका।

इकाई–3 अध्यापक शिक्षा– वर्तमान स्थिति एवं समस्याएं तथा समाधान। नवीन शिक्षा नीति के तहत अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता लाने की दृष्टि से लिये गये निर्णय। डायट (DIET) एवं एन.सी.टी.ई. (NCTE) का अध्यापक शिक्षा में उन्नति हेतु भूमिका।

इकाई–4 शिक्षा की कतिपय बुनियादी समस्याएं– जनसंख्या शिक्षा, स्त्री शिक्षा।

शिक्षा में वैश्वीकरण एवं इसका प्रभाव। भारत में निजी (प्राइवेट) विश्वविद्यालय एवं विदेशी विश्वविद्यालय तथा साथ ही साथ वर्तमान भारतीय विश्वविद्यालय का भविष्य।

अध्ययन ग्रन्थ :

- अग्रवाल, जे0सी0 (2007), भारत में शिक्षा व्यवस्था, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली।
- शर्मा, आर.ए. (2007), भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
- पाण्डेय, के0पी0 (1999), भारतीय शिक्षा की समस्याएं– वर्तमान संदर्भ, अमिताश प्रकाशन, मेरठ।
- पाण्डेय, रामशकल एवं मिश्र, करूणा शंकर, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाठक, पी0डी0 (1974), भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याए, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- कपूर, उर्मिला (2010), भारतीय शिक्षा इतिहास और समस्याएं, साहित्य प्रकाशन, आगरा।

चतुर्थ सेमेस्टर
चतुर्थ प्रश्न पत्र
प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी

मौखिकी	: 30 अंक
सत्रीय कार्य	
1) रिव्यू ऑफ बुक (दो)	: 10 अंक
2) शोधलेख एवं प्रस्तुतीकरण	: 25 अंक
3) पद विश्लेषण	: 20 अंक
4) मल्टीमीडिया प्रजेन्टेशन	: 15 अंक
कुल योग =	**100 अंक**